संपादकीय

10.5005/jras-4-2-v

आयुर्वेदीय शब्दावली का मानकीकरण – वैश्वीकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम

आयुर्वेद में शब्दावली का एक समृद्ध कोष है जो प्रायः संस्कृत भाषा में लिखे आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में समाहित है। यह शब्दावली विभिन्न चिकित्सकों, शोधार्थियों, छात्रों तथा शिक्षाविदों द्वारा उपयोग की जाती है। प्रायः यह देखा गया है कि यह शब्दावली मानकीकृत नहीं होने के कारण इसके उपयोग में भ्रान्ति एवं अर्थ की विभिन्नता पाई जाती है। इस तरह की भ्रान्तियां सम्बन्धित चिकित्सा प्रणाली की विश्वसनीयता पर संदेह पैदा करती हैं। अभिप्रेत अर्थ के स्पष्ट संचार के लिए शब्दावली का एक समान उपयोग आवश्यक है तथा नैदानिक शब्दावली के मामले में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है।

पिछले कुछ समय से आयुर्वेद की एक महत्त्वपूर्ण चिकित्सा प्रणाली के रूप में स्वीकार्यता उत्साहजनक रूप से बढ़ रही है, साथ ही, आयुर्वेद को एक सशक्त स्वास्थ्य चिकित्सा प्रणाली के रूप में प्रतिष्ठापित करने की दिशा में आयुष मंत्रालय द्वारा भी लगातार प्रयास किये जाते रहे हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह पूर्वाकांक्षित है कि समान उद्देश्यों एवं हितों वाले राष्ट्रों तथा व्यक्तियों के बीच रचनात्मक सहयोग को बेहतर बनाने वाले प्रभावी संचार को सुगम किया जाए।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा विषय विशेषज्ञों की कई बैठकों को शामिल करते हुए विस्तृत परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से मानकीकृत आयुर्वेद शब्दावली (SAT) विकसित करने का कार्य शुरू किया गया। इसके अलावा, ICD-10, SNOMED-CT, इत्यादि जैसे अन्य मानकों के साथ इन शब्दावली को मैप करने के साथ-साथ आयुर्वेद की शब्दावली को अंतर्राष्ट्रीय मानकों में शामिल करके अंतराल को भरने का प्रयास भी किया जा रहा है। मानकीकृत शब्दावली को सभी हितधारकों के उपयोग के लिए एक सर्वेबल तथा यूज़र फ्रेंडली इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म 'राष्ट्रीय आयुष रुग्णता और मानकीकृत शब्दावली इलेक्ट्रॉनिक पोर्टल (NAMASTE पोर्टल) पर भी उपलब्ध कराया गया है। रुग्णता के आंकड़ों के संदर्भ में सार्थक डेटा संग्रह के लिए इस शब्दावली का सफलतापूर्वक उपयोग किया जा रहा है। देश के विभिन्न भागों में कार्यरत आयुष संस्थानों से संरचित प्रारूप में बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र किया गया है जो कि स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में आयुष प्रणाली के महत्त्वपूर्ण योगदान की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता है। SAT के इस विकास को उन बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी-सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक को ऑपरेशन (बिम्सटेक) प्लेटफॉर्म और दक्षिण एशियाई देशों के साथ साझा किया गया है, जहाँ पर आयुर्वेद को चिकित्सा प्रणाली के तौर पर मान्यता दी गई है।

मुझे विश्वास है कि परिषद् के ये प्रयास भविष्य में आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली को विश्व स्तर पर मजबूत करेंगे और उन्नत सॉफ्टवेयर तकनीकों जिसमें उपयोगकर्ताओं द्वारा आयुष शब्दावली का सकारात्मक तथा रचनात्मक उपयोग किया जाता है, उनके विकास का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

प्रो. वैद्य करतार सिंह धीमान
मुख्य सम्पादक
आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान पत्रिका
महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

Editorial

10.5005/jras-4-2-vi

Standardization of Ayurveda Terminologies—A way forward for globalization

Ayurveda has a rich corpus of terminologies, which is mostly in Sanskrit language and available in various compendia of Ayurveda written over centuries. These terminologies are utilized by practitioners, students and academicians of diverse research disciplines. However it is observed that usage of these terminologies is not standardized leading to confusion and misinterpretation. Such confusion often raises doubts on the credibility of the respective system. The uniform use of terminologies is needed for clear communication of the intended meaning. This is especially critical in case of diagnostic terminologies.

The acceptance of Ayurveda as a system of medicine has grown by leaps and bounds in the recent past consequent to the persistent efforts of the Ministry of AYUSH; to position Ayurveda as a potential health care system. To achieve this, it is imperative that effective communication to improve productive cooperation among individuals and nations having common interests with respect to Ayurveda is encouraged and facilitated.

To achieve this target CCRAS initiated the task of developing Standardized Ayurveda Terminologies (SAT) through an exhaustive consultative process involving subject experts and multiple rounds of meetings. Further, efforts are also on to map these terminologies with other standards such as ICD-10, SNOMED-CT, etc, as well as filling the gaps in international standards by incorporation of Ayurveda terminologies. The standardized terminologies have also been made available on a searchable and user friendly electronic platform, the National AYUSH Morbidity and Standardized Terminologies Electronic Portal (NAMASTE Portal) for the use of all stakeholders. The terminologies are also being successfully used for meaningful data collection in terms of morbidity statistics. Till date, a huge volume of data has been collected in structured format from various AYUSH institutions functioning through the length and breadth of the Country which give a clear picture of the contributions that AYUSH systems are making in the health care domain of our Country. This development of SAT has been shared with Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation (BIMSTEC) platform and South Asian Countries wherein Ayurveda is recognized system of medicine, who has also shown their concurrence and welcomed this development.

I am sure that these efforts will strengthen the system of Ayurveda globally in the long run and will pave way for development of advanced software technologies wherein AYUSH terminologies will be used by the users.

Prof. Vaidya Kartar Singh Dhiman
Editor-in-Chief
Journal of Research in Ayurvedic Sciences

Director General
Central Council for Research in Ayurvedic Sciences
Ministry of AYUSH, Government of India
New Delhi